गाँधी जी और उनकी शिक्षा नीति

रवि भाटिया*

गाँधी जी सत्य, अहिंसा, शांति और मानवता के समर्थक थे। गाँधी जी मनुष्य के लिए सबसे आवश्यक वस्तु शिक्षा को मानते थे, जिससे व्यक्ति अपने परिवार, समाज और देश सभी का भला कर सकता है। किन्तु अंग्रेज़ी सरकार ने भारतीय शिक्षा पद्धति का हनन किया और यहाँ अंग्रेज़ी शिक्षा पद्धति को बढ़ावा दिया जो बहुत महंगी थी और बहुआयामी नहीं थी जबकि गाँधी जी अपनी पारम्परिक शिक्षा पद्धति को सर्वश्रेष्ठ मानते थे जो कि सर्वायामी होती थी, जिसमें व्यक्ति अपने सर्वांगीण विकास के साथ-साथ आपसी प्रेम, भाई चारा, सौहार्द्र, एकता की भावना आदि नैतिक मूल्यों को भी सीखता है। गाँधी जी अंग्रेज़ी शिक्षा को भी आवश्यक मानते थे किंतु वे इस बात पर भी बल देते थे कि प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही होनी चाहिए, जिससे व्यक्ति अपने धर्म, संस्कृति और नैतिकता से जुड़ा रहे। वे शिक्षा में प्रायोगिक शिक्षा पर भी बल देते थे जिसमें शारीरिक श्रम वाले कार्य आते हैं और इससे हम अपने लघु उद्योगों को भी बढ़ावा दे सकते हैं। गाँधी जी ने स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया क्योंकि शिक्षित स्त्रियाँ अपने परिवार के विकास के साथ पूरे देश के विकास में योगदान दे सकती हैं। गाँधी जी ने अपने शिक्षा दर्शन में व्यक्ति के मानसिक, बौद्धिक और शारीरिक विकास के साथ-साथ उसमें मानवता और आध्यात्मिकता का विकास भी आवश्यक माना है।

मोहनदास करमचंद गाँधी को सारी दुनिया महात्मा गाँधी के नाम से जानती है। हम भारतवासी उन्हें राष्ट्रपिता भी कहते हैं क्योंकि उन्होंने लंबे समय के लिए संघर्ष किया, अनेक बार जेल की सलाखों के पीछे रहे और सत्याग्रह और अंहिसा को अपनाकर भारत को अंग्रेज़ी शासन से मुक्ति दिलवाई, हमें 200 साल की गुलामी से स्वाधीन बनाया। उन्होंने

* *शिक्षक*, 4, मॉल अपार्टमेंट, मॉल रोड, दिल्ली 110054

इस संघर्ष में भाई चारा, शांति, प्रेम-भाव और अहिंसा का रास्ता कभी नहीं छोड़ा। भारत में अनेक जातियाँ, भाषाएँ, धर्म और विभिन्नताएँ हैं। गाँधी जी ने सभी धर्मों में अनेक अच्छाइयाँ देखीं और वे अपनी प्रार्थना सभाओं में सभी धर्मों की अच्छाइयों का बयान करते। उनका मानना था कि सत्य एक है परंतु वहाँ तक पहुँचने के रास्ते अनेक हैं और ये विभिन्न धर्म सत्य तक पहुँचने के लिए अलग-अलग रास्ते हैं।

महात्मा गाँधी अहिंसा और शांति के पुजारी थे। उनके लिए अहिंसा का अर्थ केवल यह नहीं था कि शस्त्र नहीं उठाना, बल्कि अहिंसा का सही मतलब यह था कि मन में, सोच में, बर्ताव में भी किसी से घृणा नहीं करना, उसको हानि नहीं पहुँचाना और किसी को नीचा नहीं दिखलाना या ठेस नहीं पहुँचाना। उनका मानना था कि अगर मन साफ़ और सहज हो तो बर्ताव और आचरण भी साफ़ और शांतिपूर्ण रहेगा। ऐसी सोच या मानसिक स्थिति कैसे आ सकती है? गाँधी जी के लिए ऐसी मन:स्थिति लाने के लिए दो बातें ज़रूरी थीं – एक अच्छा धर्म-कर्म और दूसरा अच्छी शिक्षा।

गाँधी जी की धर्म में आस्था और विश्वास अटूट था। वे श्रीमद्भगवद्गीता को सदा अपने साथ रखते और उसके दिखाए गए रास्ते पर चलते। उन्होंने अपना सारा जीवन श्रीमद्भगवद्गीता के सिद्धांतों पर चलकर बिताया। उन्होंने आसक्ति योग नाम की पुस्तक में गीता के श्लोकों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया। वे कहते थे कि जब-जब वे दुखी होते थे और अंधकार सामने दिखता था तो गीता के माध्यम से उनको प्रकाश और सही रास्ता मिल जाता था।

जीवन का दूसरा सार वे सही शिक्षा को मानते थे। उनकी सोच में शिक्षा का मतलब कागज़ी उपलब्धि (जैसे डिग्री या डिप्लोमा) ही नहीं था। न ही शिक्षा प्राप्ति केवल व्यक्ति की भलाई का रास्ता था। बल्कि सही शिक्षा के रास्ते से व्यक्ति की भलाई भी होती है और समाज और देश का कल्याण भी होता है। गाँधी जी ने अपने समय में देखा था (और यह स्थिति आज भी सही है) कि जो देश शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा कर रहे थे, वे विकसित थे और जिन देशों ने इस क्षेत्र में उन्नति नहीं की थी वे पिछड़े थे और उस युग में गुलाम भी थे जैसे कि भारत, श्रीलंका, थाइलैंड, अफ्रीका के अनेक देश और इराक आदि।

उपनिवेश (या गुलामी) में किस प्रकार से भारत की शिक्षा प्रणाली का अंग्रेज़ी शासन द्वारा हनन हुआ था, उस पर गाँधी जी ने विस्तार से लिखा था। इसका उल्लेख उन्होंने अपने अनेक भाषणों, पत्रों आदि में किया है। 'यंग इंडिया' नाम की पत्रिका में तीन-चार लेख 1930-39 में प्रकाशित हुए थे जिनमें भारत के गाँवों में प्राथमिक शिक्षा प्रणाली का विस्तार से वर्णन किया गया था। मद्रास हो या पंजाब, गाँव-गाँव में स्कूली बच्चों की शिक्षा उपलब्ध थी। पाठशालाओं में, मदरसों में बच्चे आते थे और पढ़ाई करते थे। सन् 1826 में

मद्रास में 11,758 प्राइमरी स्कूल थे, जिनमें 1,57,666 लड़के और 4023 लड़कियाँ पढ़ती थीं। इसका वर्णन एक अंग्रेज़ी अफसर थॉमस मुनरो ने किया था। इसी प्रकार से पंजाब में बच्चों के पढ़ने की सुविधाएँ थीं। मंदिर हो, धर्मशाला हो या मस्जिद, इनके साथ पाठशाला या मदरसे जुड़े होते थे जिनमें बच्चे पढ़ने आते थे। शायद ही ऐसा कोई गाँव था जहाँ शिक्षकों या गुरुओं को उनकी मेहनत और सेवाओं के लिए कुछ धनराशि या अनाज न दिया जाता हो। गुरुद्वारों में भी ये सुविधाएँ पाई जाती थीं।

एक अंग्रेज़ी विद्वान डॉ. लीटनर (जो गर्वमेंट कॉलेज लाहौर के प्रिंसीपल थे) ने पंजाब की शैक्षिक व्यवस्था की पुष्टि की थी। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में लिखा था कि पंजाब के हर गाँव में शैक्षिक व्यवस्था थी। मंदिर हो या गुरुद्वारा, पुजारी हो या महंत, इनका शिक्षा के क्षेत्र में अनूठा योगदान था। परंतु इस सुखद व्यवस्था का नाश अंग्रेज़ी शासनकाल में हुआ। 'यंग इंडिया' के 29 दिसंबर, 1920 अंक में एक लेख प्रकाशित हुआ जिसमें 1849–1886 के दौर में अंग्रेज़ों ने किस तरह से पंजाब की पारंपरिक शिक्षा प्रणाली का नाश किया था, का उल्लेख है।

गाँधी जी ने इन लेखों और तत्त्वों का विवरण देते हुए 1931 में सर फिलिप हारतोग को अनेक पत्र लिखे थे और इस पर ज़ोर डाला था कि भारत की पारंपरिक शैक्षिक प्रणाली प्रभावशाली और सुदृढ़ थी जिसका अंग्रेज़ी हुकूमत द्वारा हनन और नाश हुआ था।

अंग्रेज़ों ने कुछ स्कूल जो कि पक्की दीवारों या बिल्डिंगों में स्थित थे, चलाए थे और जिनमें पश्चिमी शिक्षा प्रदान की जाती थी। गाँधी जी ने इस व्यवस्था का पूर्णरूप से विरोध किया था। उन्होंने वाङ्मय (Collected Works Vol. 48, pp. 199-200) में स्पष्ट शब्दों में लिखा था "*अंग्रेज़ों ने जो स्कूल यूरोपीय शैली में चलाए हैं उनको चलाने के लिए बहुत धनराशि चाहिए जो कि भारत जैसे एक गरीब देश के पास उपलब्ध नहीं है। मेरा अटूट विश्वास है कि इनके माध्यम से एक सौ साल में भी भारत को प्राथमिक शिक्षा नहीं दिलवाई जा सकती।*"

गाँधी जी चाहते थे कि शिक्षा ऐसी हो जो पेड़ के नीचे बैठकर भी, बहुत कम पैसों में उपलब्ध कराई जा सकती हो और जहाँ लड़कों के साथ लड़कियों को भी पढ़ने का अवसर मिले। गाँधी जी ने लड़कियों की शिक्षा पर पूरा ज़ोर दिया था। हमारे समाज में कई परिवार लड़कों की शिक्षा का महत्त्व तो समझते हैं परंतु बालिकाओं को पढ़ाने-लिखाने से पीछे हटते हैं। गाँधी जी ने इस सोच का पूरे ज़ोर-शोर से विरोध किया। उनकी सोच में लड़कियों के पढ़ाने से पूरे परिवार का भला होता है।

भारत के अनेक क्षेत्रों में और विशेष तौर पर गाँवों में लड़कियों का कम आयु में 13–14 वर्ष में ही, विवाह कर दिया जाता था। गाँधी जी का विवाह कस्तूरबा से तब हुआ था जब उन दोनों की आयु मात्र 13 वर्ष की

थी। इस कम उम्र में बच्चों को पढ़ना खेलना चाहिए और गाँधी जी को इस बात का बहुत दुख था। अगर लड़कियाँ पढ़ लिख पाती हैं तो ज़रूरत पड़ने पर वे नौकरी भी कर सकती हैं। आज के युग में यह बात और भी प्रासंगिक हो गई है।

गाँधी जी देश के सैंकड़ों गाँवों में भ्रमण करते थे और सामान्य लोगों से मिलते थे। भारत में अनेक संस्कृतियों और अलग-अलग भाषाएँ जो इन संस्कृतियों की प्रतिबिम्ब हैं, पाई जाती हैं। जिस प्रकार से गाँधी जी हर व्यक्ति का आदर और सम्मान करते थे उसी प्रकार वे उनकी भाषाओं का आदर करते थे इसी कारणवश वे भारतीय भाषाओं का सम्मान करते थे।

महिला शिक्षा पर गाँधी जी की सोच और शब्द साफ़ थे। उनका मानना था कि लड़कियों को शिक्षा से वंचित नहीं रखना चाहिए। महिलाओं और पुरुषों के समान अधिकार हैं और महिलाओं को अशिक्षित रखकर हम उनके अधिकार का हनन कर रहे हैं। अगर पुरुष को शिक्षित बनाना है तो उसी तरह महिला को भी शिक्षित बनाना उचित है। बल्कि यदि हम महिलाओं को निरक्षर रखते हैं तो उसका संपूर्ण व्यक्तित्व नहीं निखर पाएगा।

इस संदर्भ में गाँधी जी ने यह भी कहा था– पुरुष शिक्षित बनता है तो एक व्यक्ति का लाभ होता है। परंतु यदि महिला शिक्षित बनती है तो उसके पूरे परिवार का भी लाभ होगा क्योंकि वह अपने बच्चों को भी पढ़ा-लिखा सकती है।

जहाँ तक लड़के-लड़की के स्कूली सह शिक्षा (Co-education) का प्रश्न था, उस पर भी गाँधी जी के विचार स्पष्ट तथा स्वतंत्र थे। वह सह शिक्षा के हक में नहीं थे – उनकी सोच में इसके गलत परिणाम हो सकते हैं। अमृत बाज़ार पत्रिका के 2 जनवरी 1935 के अंक में उन्होंने लिखा था–

''*सह शिक्षा अभी प्रयोगशाली स्थिति में है। हम निश्चित तौर पर नहीं कह सकते कि इसके परिणाम अच्छे होंगे या नहीं। परिवार में लड़के-लड़की का एक साथ रहना तथा उनको बराबर का हक देना, पहले इस बात पर ज़ोर देना चाहिए। सह शिक्षा का प्रश्न बाद में लिया जा सकता है।*''

साथ-ही-साथ गाँधी जी चाहते थे कि शिक्षा का माध्यम अपनी मातृभाषा ही होनी चाहिए। इससे न केवल बच्चे अच्छे ढंग से शिक्षा ग्रहण कर पाते हैं बल्कि वे अपनी संस्कृति और आस्थाओं से भी जुड़े रहते हैं। इस सोच की सच्चाई हम आज पूरे तौर से देख सकते हैं। हमारे बच्चे जो अंग्रेज़ी माध्यम से पढ़ते हैं वे अक्सर अपनी परंपराओं और सामाजिक गतिविधियों से दूर रहते हैं। गाँधी जी चाहते थे कि बच्चे अंग्रेज़ी भी पढ़ें लेकिन प्राथमिक शिक्षा का माध्यम उनकी मातृभाषा हो। इस विचार से हमारे शिक्षाशास्त्री और विद्वान आज पूरी तरह से सहमत हैं। उन्होंने यह भी कहा है कि यदि हमारी शिक्षा अपनी

मातृभाषा में होती है तो हमारे पारिवारिक संबंध भी सुधरते हैं।

कांग्रेस पार्टी का एक महा अधिवेशन 1920 दिसम्बर में बम्बई में हुआ था जहाँ पर गाँधी जी ने भाग लिया था। एक विश्वविद्यालय को संबोधित करते हुए गाँधी जी ने इस अधिवेशन में यह कहा–

"मैं आशा रखता हूँ कि यह विश्वविद्यालय ऐसा प्रबंध करेगा जिसमें यहाँ आने वाले युवक अपनी मातृभाषाओं के माध्यम द्वारा शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। हमारी भाषा हमारा अपना प्रतिबिम्ब है। और यदि मुझसे कोई यह कहे कि हमारी भाषाएं इतनी कंगाल हैं कि उनके द्वारा उत्तम विचार नहीं किये जा सकते, तो मैं यह कहूँगा कि हमारा अस्तित्व जितना जल्दी मिट जाए उतना हमारे लिये अच्छा होगा....."

शिक्षा के माध्यम का एक और परिणाम सामने आया है। अंग्रेज़ी जानने वाले और बोलने वाले और हिंदी या प्रादेशिक भाषाएँ बोलने वाले जिनको अंग्रेज़ी नहीं आती या कम आती है, इन दो वर्गों में खाई या दरार बन गई है जिससे समाज में भी बंटवारा हो गया है। अंग्रेज़ी बोलने वाले अपने आप को श्रेष्ठ समझते हैं, वे अभिमानी बन जाते हैं और दूसरे वर्ग के व्यक्तियों की अवहेलना करने लगते हैं।

शिक्षा कैसी हो इस पर गाँधी जी ने काफ़ी बल दिया था। शिक्षा ऐसी हो जो प्रासंगिक हो जिसका उपयोग व्यक्ति केवल नौकरी पाने के लिए ही न करे, बल्कि जिससे उसके परिवार का, समाज का और हो सके तो देश का भी भला हो। अगर कोई व्यक्ति जीव विज्ञान या वनस्पति विज्ञान की पढ़ाई करता हो तो उसे नौकरी तो ज़रूर मिलनी चाहिए पर साथ-ही-साथ उसका लाभ पशु पालन और खेती बाड़ी में भी होना चाहिए। अगर कोई बच्चा डॉक्टरी शिक्षा पाता है तो उसका यह भी दायित्व है कि वह अपने गाँव या शहर में अपनी पढ़ाई के माध्यम से रोगियों का उपचार कर सके।

गाँधी जी ने प्रायोगिक शिक्षा - जैसे कि कपड़ा बुनना, सिलाई कढ़ाई का काम, लकड़ी का काम (बढ़ई) या नल, पम्प की मरम्मत करना (जिसे आज हम वोकेशनल शिक्षा या प्रशिक्षण कहते हैं) पर भी ध्यान दिया। वे चाहते थे कि लघु उद्योग का बढ़ावा हो। इसके अलावा शरीर के बारे में ज्ञान रखना और छोटी-मोटी बीमारी का उपचार करना इत्यादि का महत्त्व समझते थे और इन सब बातों का उल्लेख उन्होंने अपनी पुस्तक 'हिंद स्वराज' में किया है। साथ-ही-साथ शिक्षा हमें पशुओं के प्रति संवेदना रखना और छूआछूत या अंधविश्वास से ऊपर उठना भी सिखाती है। गांधी जी की मान्यता थी कि सही शिक्षा प्रणाली में ये सभी अवयव होने चाहिए।

इस शिक्षा का एक और पहलू था। कुछ लोग ऐसे थे (ऐसे लोग आज हमारे युग में पाये जाते हैं) जो पढ़-लिख कर किसान के परिश्रम को या कड़ी मेहनत के काम को नीचा समझते हैं - उनके लिए ऐसा काम करने से

उनकी छवि गिर जाएगी। गाँधी जी की शिक्षा प्रणाली, जिसको वह 'नई तालीम' कहते थे, में ऐसी मानसिकता गलत थी और उसको बदलना चाहिए। गाँधी जी के लिए सफ़ाई का बहुत महत्त्व था। घर हो या गली, दोनों को साफ़ रखने की अत्यंत आवश्यकता थी। वे यह भी मानते थे कि संसाधन बहुमूल्य है चाहे वह अन्न हो, पानी हो, बिजली हो या कपड़ा-लत्ता हो।

आज के परिप्रेक्ष्य में गाँधी के ये विचार बहुत सुदृढ़ हैं। पर्यावरण का बचाव ऐसे होता है।

वे कहते थे – "विश्व में ज़ायज़ दरकार के लिए पर्याप्त संसाधन हैं परंतु लोभ या लालच के लिए दुनिया के सारे संसाधन कम पड़ जाएंगे।" गाँधी जी हर वस्तु का पूरी तरह से इस्तेमाल करते थे – कपड़ा, जूता, कागज़, पैंसिल आदि। उनके बारे में इस पहलू पर एक दिलचस्प किस्सा है। उनके पास एक पैंसिल थी जिसको फ़ेंका जा सकता था परंतु गाँधी जी ऐसा नहीं करना चाहते थे। उनके बेटे ने देखा तो सोचा कि उनको नई पैंसिल देनी चाहिए। पुरानी छोटी-सी पैंसिल को हटा कर नई बड़ी पैंसिल उनके कागज़ों के साथ रख दी। अगले दिन जब गाँधी जी ने अपनी पुरानी पैंसिल को नहीं देखा तो परेशान हो उठे ओर इधर-उधर उसको ढूँढ़ते रहे। गाँधी जी की परेशानी को देखकर, बेटे ने मजबूर होकर पुरानी पैंसिल सामने रख दी। गाँधी जी को गुस्सा आया पर साथ में हँसी भी। परंतु उन्होंने पुरानी पैंसिल का पूरा इस्तेमाल करके ही छोड़ा।

हमने पहले ही लिखा कि जो विकसित देश थे उनकी शिक्षा का स्तर ऊँचा था। यह विश्वास गाँधी जी का भी था और वे मानते थे कि ग्राम राज्य या रामराज्य को पाने के लिए शिक्षा की अहम् भूमिका थी। शिक्षा कुछ समय के लिए कोई कागज़ी डिग्री को पाने के लिए ही नहीं होनी चाहिए। बल्कि सारे जीवन काल के लिए अनिवार्य है। जैसे जीवन स्थिर नहीं रहता वैसे ही शिक्षा कभी समाप्त नहीं होती। जैसे-जैसे समय बदलता है वैसे-वैसे शिक्षा भी बदलनी चाहिए और हमें उत्तम शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। जीवन मतलब कार्य, और शिक्षा मानो एक ही सिक्के के दो पहलू थे। पुरानी शिक्षा प्रणाली में शारीरिक और बौद्धिक कार्यों में अंतर था। 'नई तालीम' में यह अंतर निरर्थक था और दोनों पहलुओं की खाई को पाट दिया गया था।

गाँधी जी के लिए शिक्षा का महत्त्व इतना ही नहीं था कि किसी व्यक्ति को साक्षर बनाया जाए और कार्य करने की कुशलता और योग्यता दिलाई जाए। वह चाहते थे कि शिक्षा ऐसी हो जिससे व्यक्ति अच्छा इंसान बने, अच्छे मूल्य ग्रहण करे, अच्छा नागरिक बने और ईश्वर या खुदा में उसकी आस्था बढ़े। ये सब पहलू एक अच्छी और समृद्ध शिक्षा प्रणाली के अंग हैं। अच्छे धर्म कर्म भी ये मूल्य और गुण सिखलाते हैं। साथ में अच्छी शिक्षा इन मूल्यों को और सुदृढ़ बनाती है।

गाँधी जी की समाज की संकल्पना इन मूल्यों या आदर्शों पर आधारित थी – सत्य,

अहिंसा, करुणा, मैत्री, धार्मिक आस्था और सही शिक्षा। गाँधी जी ने इन आदर्शों या पुरुषार्थों को चार वर्गों में बांटा था – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इनके बारे में उन्होंने विस्तार से लिखा भी है और अपनी प्रार्थना सभाओं में भी इनकी व्याख्या की थी। उनके लिए आस्तिक या धार्मिक होने का मतलब था सत्य को पा लेना और संन्यास लिए बिना भी, जीवन चक्र में रहते हुए भी, लोभ, मोह, हिंसा और असत्य से दूर रहना और परमात्मा में लीन हो जाना। गाँधी जी अहिंसा के रास्ते पर चलते थे। उनके लिए सत्य और अहिंसा का आपस में चोली दामन का संबंध था। सत्य ही हमारा लक्ष्य है और अहिंसा उसको पाने का रास्ता।

अगर गाँधी जी की सोच और उनके जीवन को हम गहराई से परखें तो हम देखेंगे कि उनकी कोशिश थी कि वे परमात्मा को पा सकें। वे चाहते थे कि आत्मा और परमात्मा एक हो जाएं। और इसके लिए सत्य और आस्था अत्यंत आवश्यक है। वे मानते थे कि जहाँ सत्य है वहाँ सत भी है और जहाँ सत्य है वहाँ ब्रह्म का निवास है जो सच्चिदानंद है – सत, चित् और आनंद। गाँधी जी पहले मानते थे कि ईश्वर सत्य है लेकिन अपने अनुभवों और जीवन में अपने प्रयोगों के आधार पर उनका विश्वास बदलने लगा और उनको लगा कि सत्य ही ईश्वर है। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सत्य और ईश्वर को पाने के लिए मानव सेवा आवश्यक है बल्कि उनकी यह मान्यता बन गई कि मानव सेवा और करुणा ही ईश्वर की सेवा है और ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र साधन है। उनका यह कहना था कि आदर्श शिक्षा पद्धति में शिक्षित व्यक्ति में मानवों के प्रति कर्त्तव्य, उनकी सेवा, करुणा–भाव, अहिंसा, मैत्री, नैसर्गिक रूप से पल्लवित होंगे। इन मूल्यों की प्राप्ति के कारण ही वे आदर्श नागरिक बन सकेंगे।

निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि गाँधी जी के शिक्षा दर्शन में केवल मानसिक और बौद्धिक विकास ही नहीं होता, व्यक्ति में मानवता और आध्यात्मिकता का विकास भी होता है। सही शिक्षा का अर्थ केवल साक्षरता या योग्यता पा लेना नहीं है बल्कि अहं का विनाश होना, मानववादी बनना, सत्य को पाना और ईश्वर को लक्ष्य रखकर जीवन में आगे बढ़ना है। हमें गाँधी जी के लक्ष्यों एवं आदर्शों को अपनाना चाहिए।